DSSSB TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR WITH ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
INDIAN GEOGRAPHY
प्रमुख झील एवं परियोजना
Part -3
LIVE
13-06-2024 08:00 PM

प्राथमिक :- आधार = प्रकृति
(प्राकृतिक संसाधन)

बागवानी
मत्स्यपालन
कुक्कुटपालन
पशुपालन

द्वितीयक :- निर्माण = स्थायी
विनिर्माण = अस्थायी

तृतीयक :- ↓
विद्युत
गैस गलापूर्ति

सेवा देने
वाला स्रोत

होटल
बीमा संचार
बैंकिंग
परिवहन

क्षेत्रक

1) प्राथमिक क्षेत्रक

- जहाँ आय प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त होती है।

1) कृषि 2) पशुपालन
3) वानिकी 4) बागवानी
5) मत्स्यपालन 6) खनन
7) उत्खनन

2) द्वितीयक क्षेत्रक

- जहाँ पर निर्माण और विनिर्माण दोनों शामिल हों।

निर्माण - स्थायी परिसम्पतियां

विनिर्माण - अस्थायी परिसम्पतियां

Ex. विद्युत गैस एवं जलापूर्ति

3) तृतीयक क्षेत्तक

- इसे सेवा क्षेत्रक कहते है।
- इसका कार्य बाकी के दोनों क्षेत्रकों को सेवा उपलब्ध कराना है।

Ex. होटल, बीमा, बैंकिंग, परिवहन, संचार

- कृषि अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्रक का हिस्सा है। ✓
- वर्तमान में हमारे देश की 55% जनसंख्या कृषि व उससे सम्बंधित क्षेत्रों में संलग्न है।
- हमारे देश के GVA (Gross Value Added) में इसका योगदान 2017-2018 के GDP के अनुसार 17.1% था और वर्तमान में यह 19% है।

कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र → पशुपालन, बागवानी, कृषक मजदूर

फसल प्रतिरूप

1) खरीफ

- ऐसे फसलें जिनके लिये उच्च तापमान और उच्च आर्द्रता की आवश्यकता होती है
- ये फसलें जून-जुलाई में बोई जाती है
- अक्टूबर-नवम्बर में काट ली जाती है
- ये वर्षाकाल की फसलें है

आर्द्रता + तापमान + दोनों ही उच्च

प्रमुख फसलें :- सोयाबीन , मूंग, धान, ज्वार, उड़द, बाजरा, लोविया, मक्का, रागी, गन्ना, तम्बाकू, तिलहन, कपास

2) रबी

- ऐसे फसलें जिनके लिये सामान्य तापमान और आर्द्रता की आवश्यकता होती है।
- ये अक्टूबर -नवम्बर में बोई जाती है
- मार्च-अप्रैल में काट ली जाती है
- शीतकालीन पश्चिमी विक्षोभ की वर्षा इन फसलों की खेती में सहायक होती है।

आर्द्रता = ०
तापमान कम

प्रमुख फसलें :- गेंहूँ , जौ , सरसों, चना, मटर, आलू, मसूर, अलसी

3) जायद

रबी और खरीफ की मध्यवर्ती फसल है।

ये ग्रीष्मकाल की फसलें है

अप्रैल-मई में बोकर जून-जुलाई में काट ली जाती है।

प्रमुख फसलें :-

खीरा, ककड़ी, करेला, सब्जियां तरबूज, खरबूज

झूमकृषि (स्थानान्तरीय कृषि) shifting cultivation -

- सामान्यतः यह खेती जनजातियों के द्वारा अपनायी जाती है।
- वन या जंगलों को काटकर, उन्हें जलाकर कृषि की जाती है, जब तक इन क्षेत्रों की उर्वरता बनी रहे, तब तक यहाँ पर खेती की जाती है उसके बाद आगे दूसरे जंगलों में शिफ्ट हो जाते हैं।
- यह कृषि परम्परागत कृषि है, जो लोगों के ज्ञान के अभाव में की जाती है।

इस कृषि को भारत के अलग-अलग राज्यों में अलग- अलग नामों से जाना जाता है।

- उत्तरपूर्वी राज्य – झूमकृषि
- मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ - देप्पा, दहिया , वेबर
- ओड़िसा - पामाडाबी, कोमान , ब्रिंगा
- राजस्थान - बालरे
- आंध्र प्रदेश - पोड्डू या पेंडा
- मेघालय- बोगमा
- पश्चिमी घाट(केरल)- कुमारी
- झारखण्ड – कुरवा
- हिमालयी क्षेत्र - खिल
- छत्तीसगढ़ के बस्तर जिला – दीपा
- मणिपुर - पामलू

व्यवसायिक कृषि पद्धति और उनके नाम

- सेरीकल्चर - रेशमकीट पालन
- एपीकल्चर - मधुमक्खी पालन
- विटीकल्चर - अंगूर की रखेती
- फ्लोरीकल्चर - फूलों की खेती
- वर्मीकल्चर - केंचुआ पालन
- पोमीकल्चर - फलों का उत्पादन
- ओलिरीकल्चर - सब्जियों का उत्पादन
- पिसीकल्चर – मछली उत्पादन
- होर्टीकल्चर - बागवानी
- एरोपोनिक्स - हवा में पौधों को उगाना।
- हाइड्रोपोनिक्स - जल में पौधों को उगाना (मृदारहित)

प्रमुख कृषि क्रांतियां

हरित क्रांति = खाद्यान्न उत्पादन

विश्व = नॉरमान ई बोरलाग

भारत = एम.एस. स्वामीनाथन

श्वेत क्रांति = दुग्ध उत्पादन

भारत = डॉ. वर्गीज कुरियन

नीली क्रांति = मत्स्य उत्पादन

भूरी क्रांति = कोको उत्पादन

पीली क्रांति = तिलहन उत्पादन

लाल क्रांति = मांस / टमाटर उत्पादन

गुलाबी क्रांति = झींगा / प्याज उत्पादन

रजत क्रांति = अण्डा उत्पादन

बादामी क्रांति = मसाला उत्पादन

गोल क्रांति = आलू उत्पादन

सुनहरी क्रांति = फल / शहद उत्पादन

रजत रेशा क्रांति = कपास उत्पादन

सफ्रॉन क्रांति = केसर उत्पादन

हरित सोना क्रांति = बाँस

गोल्डन रेशा क्रांति = जूट